विश्व न्याय मन्दिर

28 दिसम्बर, 2005

सभी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को

परमप्रिय मित्रगण,

महाद्वीपीय सलाहकार मण्डलों के सम्मेलन को सम्बोधित 27 दिसम्बर, 2005 को दिये गये हमारे संदेश में अगली पाँच वर्षीय योजना की जो रूपरेखा दी गई है उस पर आप आने वाले सप्ताहों में परामर्श करने में व्यस्त होंगे। हम महसूस करते हैं कि प्रशिक्षण संस्थान के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित निम्नांकित टिप्पणी से इस विचार-विमर्श में लाभ होगा।

जब हमने 26 दिसम्बर, 1995 के अपने संदेश में प्रशिक्षण के औपचारिक कार्यक्रम की जरुरत पर बल दिया था तब हम जानते थे कि रूही संस्थान की पुस्तकों में आवश्यकता के अनुरूप एक पाठ्यक्रम के कुछ तत्व हैं। फिर भी, हमारा विश्वास था कि उस समय तक प्राप्त अनुभव के आधार पर दुनिया भर में प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा उपयोग में उसे लाने की सिफारिश करना हमारे लिये उचित नहीं था। इसलिये चार वर्षीय योजना के प्रारम्भिक भाग में हमारे द्वारा और हमारी ओर से लिखे गये संदेशों में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं और सलाहकारों को इस बात के लिये प्रोत्साहित किया गया था कि जो भी पाठ्यक्रम उन्हें उचित जान पड़े उसके साथ प्रशिक्षण संस्थाओं की शुरुआत करें। फिर भी, बोधगम्य कार्यक्रमों को बनाने की निहित कठिनाइयों के प्रति सजग रहते हुए, हमने बार-बार यह विचार व्यक्त किया था कि योजना का कार्यान्यवयन पाठ्यक्रम के प्रश्न को लेकर लम्बे समय तक अनिर्णय की स्थिति में नहीं रहना चाहिये और यह कि जो भी सामग्री सहज उपलब्ध है उसका उपयोग किया जाना चाहिये। दुनिया में ऐसी सामग्रियों की उपलब्धता सीमित थी और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं तथा प्रशिक्षण संस्थान मण्डल ने, जैसे-जैसे उनके बारे में उन्हें जानकारी मिलती गई, रूही संस्थान की पुस्तकों का उपयोग करना शुरू कर दिया। अक्सर यह जानकारी उन्हें सलाहकारों द्वारा दी गई। जब चार वर्षीय योजना समाप्त हुई तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि जिन राष्ट्रीय समुदायों ने रूही संस्थान द्वारा तैयार किये गये पाठ्यक्रमों की कड़ी को पूरी तरह से अपना लिया था वे उनसे काफी आगे निकल चुकी थीं जो अभी तक अपने कार्यक्रम बनाने की कोशिश कर रहे थे।

यह पाँच वर्षीय योजना ही थी जिसने सब जगह सलाहकारों, राष्ट्रीय सभाओं और संस्थान मण्डल को रूही संस्थान के पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता के प्रति आश्वस्त किया। योजना के आरम्भ में

संस्थान की मुख्य कड़ी में सातवीं पुस्तक को शामिल करने के बाद अनेक लोगों ने पाठ्यक्रमों की कड़ी के साथ-साथ लोगों के आध्यात्मिक विकास और क्लस्टरों के विकास के एक चरण से दूसरे चरण तक जाने के अन्तरंग सम्बन्ध की सराहना की। सच, जब सैकड़ों क्लस्टरों ने अपना विकास-पथ प्रशस्त किया तब संस्थाओं के सामने सभी स्तरों पर यह स्पष्ट हो पाया कि मुख्य कड़ी की पाठ्यसामग्री और उनका क्रम मित्रों को सेवा के उन कार्यों को करने के लिये तैयार कर चुका है जिनकी किसी क्लस्टर में हुए विकास को जरुरत थी। वास्तव में, हमने 27 दिसम्बर, 2005 के अपने संदेश में इस सम्बन्ध की गतिशीलता की चर्चा भी की है।

अब हम पाठ्यक्रम विकसित करने से सम्बन्धित रूही संस्थान की वर्तमान योजनाओं से परिचित हो चुके हैं, जो पूरी दुनिया में प्राप्त अनुभव के आधार पर बड़े पैमाने पर प्रसार और सुगठन के कार्यक्रम को बनाये रखने में सक्षम है। उदाहरण के लिये, हम संस्थान के इस निर्णय का स्वागत करते हैं कि पाँचवे स्थान की वर्तमान पुस्तक को तीसरी पुस्तक की शाखा के रूप में पढ़ा जाये, जो बहाई बाल कक्षा के शिक्षकों के लिये है और पाँचवीं पुस्तक के रूप में एक नई किताब, किशोर समूहों के 'अनुप्रेरकों' की संख्या बढ़ाने के लिये, लाई जाये। मुख्य कड़ी में आठवीं पुस्तक प्रभुधर्म की सेवा के संस्थागत पहलुओं से सम्बन्धित होगी और प्रसन्नता के साथ हम इसे मानते हैं कि यह पुस्तक संविदा के सभी महत्वपूर्ण सवालों का हल प्रदान करेगी। इस विचार के साथ, हम इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि रूही संस्थान की पुस्तकों को सब जगह संस्थान के पाठ्यक्रमों की मुख्य कड़ी के रूप में शामिल किया जायेगा, कम-से-कम रचनात्मक काल की पहली शताब्दी के अंतिम वर्षों तक। इस दौरान बहाई क्लस्टरों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया पर, 27 दिसम्बर के हमारे संदेश में दी गई कार्ययोजना के अधीन, अपना ध्यान केन्द्रित किया जायेगा।

किसी खास समय तक पूरी दुनिया में प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा उपयोग में लाने के लिये एक पाठ्यक्रम को चुनने का यह अर्थ नहीं है कि अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिये बहाउल्लाह की शिक्षाओं को समझने और उनके अनुरूप अपने जीवन को ढालने की दिशा में मित्रों द्वारा किये गये प्रयासों, उनकी जरुरतों और रुचियों की उपेक्षा की जाये। ना ही इन जरुरतों को पूरा करने के लिये तैयार किये जाने वाले पाठ्यक्रमों को विकसित करने की दिशा में किये गये प्रयासों का मूल्य किसी भी रूप में यह कम करता है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह भी नहीं है कि एक पाठ्यक्रम आवश्यक रूप से सबको रुचिकर लगे। इस निर्णय का जो अर्थ है वह यह कि प्रभुधर्म के विकास की वर्तमान मांगें ऐसी हैं कि आने वाले कुछ सालों के लिये प्रशिक्षण संस्थान मित्रों की सभी जरुरतों और रुचियों को पूरा करने की कोशिश न करें।

प्रभुधर्म की संस्थाएँ उन मित्रों की ऐसी इच्छाओं का सम्मान करती रहेंगी जो किसी भी कारण से रूही संस्थान की पुस्तकों के अध्ययन में रुचि नहीं रखते हैं। जो कोई भी इस अध्ययन के

प्रति प्रवृत्त नहीं हैं उन्हें यह समझना चाहिये कि सेवा के अनेक क्षेत्र उनके लिये खुले हैं, जिनमें सर्वोपरि है व्यक्तिगत शिक्षण, जो सभी बहाईयों का परमोच्च कर्तव्य है। स्थानीय दृढ़ीकरण कक्षाएँ और शीतकालीन एवं ग्रीष्मकालीन स्कूल, जो बहाई सामुदायिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग बने रहेंगे, उन्हें पर्याप्त अवसर प्रदान करेंगे कि प्रभुधर्म की शिक्षाओं का अपना ज्ञान वे गहरा सकें। ऐसे मित्रों से जो हम अपेक्षा करते हैं, जैसी कि हमने पहले भी की है, कि वे अपनी व्यक्तिगत अभिरुचि को किसी भी तरह उस शैक्षणिक प्रक्रिया के प्रसार में बाधक न बनाएँ जिसने विविध पृष्ठभूमि के लाखों लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। पिछले कुछ सालों के दौरान दूसरे संदर्भों में जो पाठ्यसामग्रियाँ विकसित की गई हैं उनके बारे में और जो विकसित की जाती रही हैं उनके बारे में भी यह स्पष्ट किया जाता है कि बहाई समुदाय में उनका उचित स्थान है। उदाहरण के लिये, कुछ प्रारम्भिक स्तर की दृढ़ीकरण कक्षाओं का आधार तैयार करती हैं जबकि दूसरी सामग्रियाँ आवश्यक संशोधन के साथ, रूही संस्थान की मुख्य कड़ी के पाठ्यक्रम की शाखा के पाठ्यक्रमों के साथ रखी जा सकती हैं।

इस संदर्भ में हम महसूस करते हैं कि शाखा के पाठ्यक्रमों के सम्बन्ध में हम थोड़ा स्पष्टीकरण दें। महाद्वीपीय सलाहकार मण्डलों के सम्मेलन में 9 जनवरी 2001 के अपने संदेश में हमने यह संकेत दिया था कि मुख्य कड़ी को एक वृक्ष के तने के रूप में समझना चाहिये जो इससे फूटने वाली शाखा रूपी अन्य पाठ्यक्रमों को सहारा देती है, प्रत्येक शाखा काम करने के किसी विशेष क्षेत्र के लिये। स्वास्थ्य से सम्बन्धित सामग्रियों का एक सेट, जो अफ्रीका में विकसित किया जा रहा है, ऐसे पाठ्यक्रमों का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। 1980 और 1990 के दशकों में सामुदायिक स्वास्थ्यकर्मियों के वर्षों के प्रशिक्षण के बाद अनेक बहाई एजेंसियों ने स्थानीय स्तर पर जटिल स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिये ऐसे अनेक पाठ्यक्रमों के सेट तैयार करने के निर्णय लिये जो लोगों को प्रशिक्षित कर सकें। जब पहले सेट का इस्तेमाल उसके आरम्भिक रूप में किया जाने लगा तब संस्थान प्रक्रिया स्थापित हो चुकी थी और यह स्पष्ट हो गया था कि जिन लोगों ने रूही संस्थान की पुस्तक 1 और 2 का अध्ययन पूरा कर लिया था वे अपने विस्तारित परिवार के सदस्यों और मित्रों के पास जाकर स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों पर चर्चा करने के लिये तैयार हो चुके थे। उस पाठ्यक्रम की रूपरेखा संशोधित की गई ताकि वह पुस्तक-2 की एक शाखा के रूप में प्रयुक्त की जा सके और इस पुस्तक का अध्ययन मुख्य कड़ी की पुस्तक संख्या-2 के साथ किया जाने लगा। इस दिशा में किये गये प्रयासों के निश्चित परिणाम मिले हैं। इस उदाहरण से यह सिद्ध होता है कि शाखा के पाठ्यक्रम बेतरतीब ढंग से एकत्र की गई सामग्रियों का असम्बद्ध संग्रह नहीं है, अपितु उनका विकास अवश्य ही वास्तविक अनुभव के आधार पर किया जाना

चाहिये और वे तर्कसंगत होने चाहिये और अगर उन्हें शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी होना है तो संस्थान कार्यक्रम के संदर्भ में उन्हें होना चाहिये। इसके अलावा, शाखा के पाठ्यक्रम की अवधारणा ही यह है कि यह पाठ्यक्रम सेवा के एक ऐसे क्षेत्र का प्रशिक्षण प्रदान करे जिसमें उनकी रुचि हो और जो मुख्य कड़ी की पुस्तकों का अध्ययन कर रहे हों। हम आशा करते हैं कि खास-खास जरुरतों को पूरा करने के लिये ऐसे पाठ्यक्रमों को विकसित किया जाना उभरते हुए समुदाय के प्रयासों का स्वाभाविक परिणाम बनेगा, एक ऐसा समुदाय जो बड़ी तत्परता से बहाउल्लाह की शिक्षाओं को वास्तविकता प्रदान कर रहा है और प्रशिक्षण सामग्रियों का उपयोग अपने अनुभव को तरतीब से सजाने तथा प्राप्त अन्तर्दृष्टि को बड़ी संख्या में लोगों को देने के लिये कर रहा है।

-विश्व न्याय मन्दिर